Indian J. Soc. & Pol. 07 (02) : 111-114 : 2020 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 July 2020 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

मध्यकालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आजमगढ़ का उद्‌भव

सुधाकर लाल श्रीवास्तव[1]

एसोसिएट प्रोफेसर,इतिहास विभाग,दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

विश्व की प्राचीन गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति को अपने हृदय में समाविष्ट किये हुए आजमगढ़ जनपद में चाहे दुर्वासा ऋषि, देवल दत्तात्रेय या कण्व जैसे ऋषि रहे हो या फिर अलगू राय शास्त्री, पंडित राहुल सांस्कृतायन, गुरू भक्त सिंह आदि सभी ने अपने ज्ञान से इस धरा को अभिसिंचित किया है। महर्षि दुर्वासा ने अपनी साधना इसी जनपद की फूलपुर तहसील के तमसा नदी के तट पर किया था, उनके संरक्षण में लाखों शिष्यों को शिक्षा भोजन एवं वस्त्र की व्यवस्था का उल्लेख है। मिट्‌टी के वर्तनों के लिए प्रसिद्ध निजामाबाद कस्बे के पास भझुई और कुवंर नदियों के संगम पर सती अनुसुइयां का आश्रम था जहां ब्रह्मा, विष्णु, महेश अबोध बालकों का रूप धारण करने को विवश हुए थे। दक्ष प्रजापति का यज्ञ स्थल भैरवनाथ स्थान वर्तमान में महराजगंज कस्बे में स्थित है। राजा जन्मेजय ने सर्पो से क्रुद्ध होकर उनके विनाश करने के लिए एक यज्ञ इसी जनपद में स्थित अवन्तिकापुरी के आवक ग्राम में किया था जो आज भी कस्बे के पास जलाशय के रूप में साथ ही मन्दिर भी विराजमान है। भगवान श्री कृष्ण की बुआ का पुत्र शिशुपाल इसी जनपद में मांगलिक मगई नदी के किनारे शिशवा ग्राम में छावनी बनाकर रहता था। यही उसका पिता सिराधू भी तपस्या करता था। रामायण काल में अयोध्या का राज्य आजमगढ़ तक विस्तृत था। उ0प्र0 के इस ऐतिहासिक जनपद की ऐतिहासिकता के साथ ही साथ वर्तमान भी कम गौरवमयी नहीं है। इसी जनपद के अयोध्या सिंह उपाध्याय, हरिऔध, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्यामनारायण पाण्डेय, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय जैसे महान साहित्यकार और अर्न्तराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शायर कैफी आजमी एवं कलात्मक चल चित्रों की अभिनेत्री शबाना आजमी ने चतुर्दिक ख्याति अर्जित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में आजमगढ़ की इसी ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS: *मध्यकालीन इतिहास, आजमगढ़, ऋषि परंपरा, हिन्दी साहित्य, ऊर्दू साहित्य*

विश्व की प्राचीन गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति को अपने हृदय में समाविष्ट किये हुए आजमगढ़ जनपद में चाहे दुर्वासा ऋषि, देवल दत्तात्रेय या कण्व जैसे ऋषि रहे हो या फिर अलगू राय शास्त्री, पंडित राहुल सांस्कृतायन, गुरू भक्त सिंह आदि सभी ने अपने ज्ञान से इस धरा को अभिसिंचित किया है। महर्षि दुर्वासा ने अपनी साधना इसी जनपद की फूलपुर तहसील के तमसा नदी के तट पर किया था, उनके संरक्षण में लाखों शिष्यों को शिक्षा भोजन एवं वस्त्र की व्यवस्था का उल्लेख है। मिट्‌टी के वर्तनों के लिए प्रसिद्ध निजामाबाद कस्बे के पास भझुई और कुवंर नदियों के संगम पर सती अनुसुइयां का आश्रम था जहां ब्रह्मा, विष्णु, महेश अबोध बालकों का रूप धारण करने को विवश हुए थे। दक्ष प्रजापति का यज्ञ स्थल भैरवनाथ स्थान वर्तमान में महराजगंज कस्बे में स्थित है। राजा जन्मेजय ने सर्पो से क्रुद्ध होकर उनके विनाश करने के लिए एक यज्ञ इसी जनपद में स्थित अवन्तिकापुरी के आवक ग्राम में किया था जो आज भी कस्बे के पास जलाशय के रूप में साथ ही मन्दिर भी विराजमान है। भगवान श्री कृष्ण की बुआ का पुत्र शिशुपाल इसी जनपद में मांगलिक मगई नदी के किनारे शिशवा ग्राम में छावनी बनाकर रहता था। यही उसका पिता सिराधू भी तपस्या करता था। रामायण काल में अयोध्या का राज्य आजमगढ़ तक विस्तृत था। प्रस्तुत शोध पत्र में आजमगढ़ की इसी ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

इसी जनपद में मौलाना फारूक, मौलाना हमीदुद्‌दीन, अल्लामा शिवली नोमानी, इकबाल अहमद सुहेल आजमी अयोध्या सिंह उपाध्याय, हरिऔध, श्यामनारायण पाण्डेय, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय जैसे महान साहित्यकार और अर्न्तराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शायर कैफी आजमी एवं कलात्मक चल चित्रों की अभिनेत्री शबाना आजमी ने चतुर्दिक ख्याति अर्जित किया है। पौराणिक और ऐतिहासिक ग्रन्थों तथा जनश्रुतियों के अनुसार तात्कालीन काशी जनपद के दक्षिणाचंल लालगंज ग्राम में 11वीं सदी के एक स्तम्भ लेख विद्यमान है। यही दुभाँव गांव से भगवान वाराह की एक प्रस्तर प्रतिमा भी उपलब्ध हुयी है। इसी प्रमाणों के आधार पर इस क्षेत्र को बाराह क्षेत्र सिद्ध किया गया है, ऐसी मान्यता है कि माता अनुसुइया के तीन पुत्र थे, प्रथम दुर्वासा दूसरे दत्रात्रेय और तीसरे चन्द्रमा। मसुई और तमसा नदियों के संगम पर बसा दुर्वासा का आश्रम आज इस साक्ष्य को प्रमाणित कर देता है। आजमगढ़ के पश्चिम में निजामाबाद मुस्लिम सूफियों का केन्द्र था। इसी मिट्‌टी ने अयोध्या सिंह हरिऔध को जन्म दिया है।(सिंह, पृ0 क)

ईसा पूर्व सातवीं शदी में आजमगढ़ का उत्तरी भाग मल्ल गणतंत्र के अधीन था, जिसकी दक्षिणी सीमा का निर्धारण पुरानी सरयू के किनारे स्थित घोषी से किया गया है। यहां राजा घोष ने वर्तमान घोसी के पास अपनी कोट बनवायी थी।(डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आजमगढ़ पृ0155) मगध सम्राट विम्बसार के पुत्र अजातशत्रु तथा उसके बंसजो ने 372 ई0 पूर्व तक मगध और काशी पर शासन किया था। आज के आजमगढ़ का दक्षिणी भू भाग काफी वर्षो तक इस राज्य का अंग बना रहा।(सादव, 1987) चन्द्रगुप्त के मगध साम्राज्य में भी आजमगढ़ का भू भाग शामिल था। मधुबन का

1: Corresponding Author

इलाका अपने लेखों में हर्ष ने लिखवाया था।(जैक्सन एण्ड आगेजन, पृ043) वह इस बात को सिद्ध करता है कि श्रावस्ती उसके साम्राज्य में सम्मिलित था।(मजूमदार ,1932 पृ0 321–322) हर्ष के समय चीनी यात्री ह्वेनसांग आजमगढ़ के पूर्वी अचंल से गुजरा था। उसने अपनी यात्रा में मगंई नदी का वर्णन किया है।(सिंह पृ055) हर्षकी मृत्यु के बाद आजमगढ़ के भू भाग को काशी जनपद के अधीन रखा गया था। ग्यारहवीं शताब्दी में इस भू भाग को गहड़वाल राजपूतो ने अपने अधीन कर लिया गोविन्द चन्द इस वंश का शक्तिशाली राजा था। सल्नत काल में गयासुदुद्दीन तुगलक के तृतीय पुत्र शाहजादा जफर ने अन्तिम राजपूत राजा शक्ति को परास्त कर मनौचा पर अधिकार कर लिया और उसका नाम बदलकर जफराबाद रख दिया। आजमगढ़ का समस्त भू भाग इसी राज्य में सम्मिलित था। 1522 में लोहानियों एवं फार्मूलियों ने अपनी शक्ति संगठित करनी शुरू कर दी, इससे भयभीत होकर नुसरतशाह ने अलाउद्दीन व मखदुम आलम की देख–रेख में अपने राज्य का विस्तार किया। मखदुम आलम ने स्वयं को हाजीपुर में स्थापित किया और घाघरा नदी के दोनों ओर के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।(हबीब एण्ड निजामी, पृ0 1158)

मुगल काल में हुमायूँ ने लोहानियों एवं फार्मूलियों को जौनपुर राज्य से निष्कासित कर दिया और घाघरा टौंस नदी के दक्षिण तट के समस्त भू भाग पर अधिकार कर लिया 1529 में जौनपुर का दौरा करते हुए बाबर तीन दिन तक आजमगढ़ जनपद के ताल रतोय नामक स्थान पर विश्राम किया था। उसने अपनी आत्मकथा में इसकी प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन किया है।(बेबरिन, पृ0679–681) हुमायूँ की पराजय के बाद शेरशाह सूरी ने जौनपुर पर अधिकार कर लिया और यहां की मशहूर तमसा नदी पर बड़ा पुल बनवाया था, जिसका खडहर आप भी है इसके अलावां उसने जौनपुर से दोहरीघाट तक सड़क भी निर्माण करवाया। शेरशाह की पुत्री की कब्र घोषी तहसील के दरगाह नामक स्थल पर आज भी विद्यमान है।(नेहरू स्मारिका,1973 पृ0 59) 1565 में अकबर के सम्राट बनने के बाद आजमगढ़ के क्षेत्र को इलाहाबाद और जौनपुर के अन्तर्गत कर दिया गया, इसी समय जौनपुर में अकबर अपनी सेना के साथ आया भी था।(इलियट एण्ड डायसन, पृ0306) यहां वह निजामाबाद कस्बे में एक महीने तक रहा। यहां पर उसने मजलिस ए वजन मनाई,(फजल, पृ0189–199) जिसमें सम्राट को सोना चाँदी में तौला गया और बाद में यह धन गरीबों में बांट दिया गया। इसके बाद जहांगीर उत्तराधिकारी बना। शाहजहां के उत्तराधिकारी बनने तक खुर्रम (शाहजहां) और परवेज के बीच वर्तमान में घोषी तहसील के पास परवेजपुर नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ था, जिसमें परवेज पराजित हुआ।(नेहरू समारिका, पूर्वोक्त) शाहजहां की पुत्री जहांआरा ने यात्रियों के रात्रि निवास के लिए मऊनाथ भंजन में एक सराय का निर्माण कराया था।

आर्कियालॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया इन इण्डियन लिट्रेचर 1935 में यह व्यक्त किया गया है कि आजमगढ़ जो संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के पूर्वी क्षेत्र में स्थित था, वह आधुनिक मेहनगर राज्य के अधीन था, और इस राज्य के सबसे ख्यातिलब्ध राजा अभिमान सिंह जहांगीर के शासनकाल में मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिए, उन्हे दौलत खाँ की उपाधि के साथ उसकी रियासत का मालिक बनाया गया आगे चलकर इस खानदान में राजा हरिवंश हुए जिनके पौत्र आजम खाँ और अजमत खाँ दो भाई थे। राजा आजम खाँ ने अपने नाम पर 1665 में आजमगढ़ और अजमत खाँ ने अपने नाम पर अजतगढ़ का निर्माण कराया था। 1665 में ही मेहनगर को दो भागों में विभाजित कर दिया गया पश्चिम भाग के शासक आजम शाह ने टमसा नदी के तट पर स्थित अपनी पुरानी कोट को निवास स्थान बनाया, जो आज भी राजा साहब की कोट या किला कहलाता है सम्राट औरंगजेब ने राजा आजम खाँ को विश्वास पात्र समझकर शिवाजी को बुलाने के लिए दक्षिण भेजा। आजम खाँ ने शिवाजी को दिल्ली दरबार में उपस्थित किया। शिवाजी को देखकर सम्राट क्रोध में आकर शिवाजी को बुरा भला कहा यह बात आजम खाँ को नागवार लगी, उसने इसका विरोध किया तो उसे सम्राट ने गिरफ्तार कराकर कन्नौज के दुर्ग में भेज दिया, वही बन्दी अवस्था में आजम खाँ की मृत्यु हो गयी।(डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृ0168) यह समाचार जब आजमगढ़ पहुंचा तो आजम खाँ के छोटे भाई अजमत खाँ को जागीर का उत्तराधिकारी बनाया गया उसने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया, विद्रोह को शान्त करने के लिए औरंगजेब ने पहले छबीलेराम और पुनः हिम्मत खाँ के नेतृत्व ने सेना भेजा, अजमत खाँ परास्त होकर पुत्रों और सेनापति के साथ भागना चाहा किन्तु सावन मास की उमड़ी हुई घाघरा नदी पार करते समय उसकी मृत्यु हो गयी।(सनातन,पृ056)

अजमत खाँ के बाद महावत खाँ मेहनगर की जागीर का राजा बना इसने भी औरंगजेब को खराज देना बन्द कर दिया। 1703 ई0 में सम्राट औरगजेब ने मिर्जाशेख के नेतृत्व में सेना भेजा, जिसे मार दिया गया। इसी बीच आजमगढ़ पर भोजपुरी राजपूत कुवंर धीरा सिंह ने आक्रमण कर दिया परन्तु पराजित होकर पडरौना के निकट एक किले में छिपा रहा जहां उसे मार दिया गया।(डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ0173)

फर्रूखसियर की मृत्यु के बाद मोहम्मदशाह के सम्राट बनने के बाद बनारस जौनपुर, गाजीपुर, चुनारगढ़ को मुर्तजा खाँ ने इन सरकारों का प्रबंध अपने सम्बन्धी मीर रूस्तम अली को इस शर्त पर दिया कि यहाँ की मालगुजारी 5 लाख रूपया वार्षिक देता रहेगा।(श्रीवास्तव, पृ042) रूस्तम अली जब मालगुजारी की पूरी रकम नही दे सका तो 1728 में मुर्तजा खाँ ने इस क्षेत्र को अवध के सूबेदार सआदत खाँ वुरहानुलमुल्क को पट्टे पर दे दिया सआदत खाँ को सात लाख वार्षिक कर देना स्वीकार किया किन्तु यही से आजमगढ का समस्त भू भाग अवध राज्य में सम्मिलित हो गया, इस पर नाराज होकर आजमगढ़ के जमींदार महावत खाँ ने कर देना बन्द कर दिया जिससे नाराज होकर सहादत खाँ ने आजमगढ़ पर आक्रमण कर दिया। महावत खाँ मजबूर होकर अधीनता स्वीकार कर लिया फिर भी सहादत खाँ ने उसे बन्दी बनाकर गोरखपुर भेज दिया जहा 1730 में उसकी मृत्यु हो गयी। महावत खाँ के बाद उसका पुत्र इरादत खाँ अकबर शाह के नाम से उत्तराधिकारी बना। 1738 में सआदत खाँ मीरू रूस्तम अली से नाराज होकर उसे दण्डित करने के लिए अपने दामाद सफदर जगं को भेजा। रूस्तम अली वार्तालाप

के लिए एक प्रमुख अधिकारी मन्साराम को सफदर जगं के पास जौनपुर भेजा। मशांराम अत्यधिक महात्वाकांक्षी था मंशाराम ने अच्छा अवसर देखकर अपने पुत्र बलवन्त सिंह को बनारस, जौनपुर और चुनारगढ़ की सरकारों का नाजिम नियुक्त करा लिया।

आजमगढ़ 1750 ई0 तक शान्त बना रहा। किन्तु 1750 ई0 में फर्रूखाबाद के नवाब अहमद खाँ वगंश ने सफदर जगं पर आक्रमण कर दिया।(श्रीवास्तव,पृ0150) सफदरजंग ने ऐसी स्थिति में आजमगढ़ के असन्तुष्ट जमींदार अकबरशाह ने बनारस के राजा बलवन्त सिंह तथा प्रतापगढ़ के राजा पृथ्वीपति को मिला लिया किन्तु इसी समय अहमद खाँ वगंश ने अपने सम्बन्धी साहब जमां को जौनपुर बनारस और चुनारगढ़ का फौजदार नियुक्त कर लिया जब कि राजा बलवन्त इन क्षेत्रों पर अपना अधिकार मानते थे। अतः बलवन्त सिंह ने इसका विरोध किया फलतः अहमद खाँ बगंश ने साहब जमां की सहायता के लिए एक सेना भेजी (मोतीचन्द,पृ0254) और आजमगढ़ के जमीदार अकबर शाह तथा माहुल के जमीदार शमशाद खाँ को बलवन्त सिंह के विरूद्ध साहब जमा की सहायता का आदेश दिया, इनकी सहायता से बलवन्त सिंह को अकबरपुर के युद्ध में परास्त किया गया। शीघ्र ही अवध के नबाब वजीर सफदर जंग ने अपने खोये क्षेत्र प्राप्त कर लिए। इस आन्तरिक कलह के फलस्वरूप आजमगढ़ की खिराज वसूल नहीं की जा सकी, अतः अवध के नवाब ने मुअज्ज्म खाँ को आजमगढ़ भेजा उसने निजामाबाद रहकर शासन करना आरम्भ किया किन्तु कुछ ही समय पश्चात् उसकी हत्या हो गयी।

1754 ई0 में सफदर जंग की मृत्यु के बाद शुजाउदौला अवध का नवाब बना उसने आजमगढ़ के इलाके का भी बन्दोवस्त गाजीपुर के नाजिम फजल अली के साथ कर दिया। फजल अली के दुष्कर्मो की सूचना जब अवध के नवाब तक पहुंची तो बेनी बहादुर की अधीनता में एक सेना भेजी, बलवन्त सिंह को भी सहायता का आदेश दिया अतः फजल अली परास्त हो गया और अब आजमगढ़ की खिराज वसूली के लिए खित्तेदारों और नम्बरदारों की नियुक्ति की गयी। वसूली के साथ शासन में भी कुछ सुधार हुआ। बक्सर के युद्ध में आजम खाँ द्वितीय ने आजमगढ़ से अंग्रेजो की सहायता किया था, अतः किसी प्रकार मन्त्रियों आदि को प्रभावित करके अपनी खोई हुई जमींदारी पुनः प्राप्त कर लिया।(डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृ0172) किन्तु 1771 में एकरामपुर के निकट उसे मार दिया गया उसके बाद उसका छोटा भाई जहाँनयार खाँ को उत्तराधिकारी बनाया गया।

1772 ई0 में नवाब ने आजमगढ़ की जमीदारी समाप्त कर उसके शासन के लिए उसे एक चकला बना दिया।(रहमान,पृ025–26) चकलेदार की सहायता के लिए 9 सदस्यीय समिति के माध्यम से 1801 तक शासन चलता रहा। 29 वर्षो तक चकलेदारों के माध्यम से शासन होता रहा 1801 में कम्पनी सरकार ने अवध के नवाब से सन्धि द्वारा आजमगढ़ को प्राप्त कर लिया, दिसम्बर 1801 में जान रूटलेज जो सत्ता हस्तान्तरित भाग आजमगढ़ और गोरखपुर का कलेक्टर था उसके द्वारा राजस्व सम्बन्धी मामलों में अनेक दण्डात्मक कार्यवाही की गयी। अन्तिम चकलेदार जगरूप सिंह के समय तक 1801 में आजमगढ़ जिले की कुल सरकारी आय 695624 रूपये 7 आने 6 पायी थी, जब कि उस समय पूरे अवध के जिलों की कुछ आय 13523474 रूपये आठ आने 3 पायी थी। आजमगढ़ का चकला अंग्रेजों के अधिकार में आ जाने के बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इस चकले को गोरखपुर में सम्मिलित कर दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकार में आ जाने से आजमगढ़ की आमदनी में निरन्तर वृद्धि होती गयी जो 1846 तक 16225069 रूपये हो गयी।

इस परिवर्तन से आजमगढ़ के रचनाकार मेहनंगर के गौतम कुल के राजपूतों के शासन का अन्त हो गया। दूसरी ओर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बढ़ते प्रभाव से असंतुष्ट यहां के राजपूतों में असंतोष की भावना बढ़ती गयी। ईसाई मिशनरियों ने यहां की हिन्दू मुस्लिम धार्मिक भावना की उपेक्षा किया। जनपद में कुछ अंग्रेज आये जमींदार भी बस गये जो अफीम और नील की खेती में लाभ उठाने लगे। मजदूरों सामन्तों और जमीदारों में व्यापक असन्तोष का परिणाम 1857 के विद्रोह में प्रस्फुटित हुआ। एक स्वतंत्र कलेक्टरी के रूप में आजमगढ़ को 18 सितम्बर 1832 को स्थापित किया गया।

शोध पत्र का मुख्य अभिप्राय विश्व की प्राचीनतम सभ्यता संस्कृति को अपने हृदय में सभाविष्ट किये हुए आजमगढ़ की धरती के सन्दर्भ में उसकी पौराणिक काल से प्राचीन और मध्यकालीन युग में उसकी महत्ता तथा इस क्षेत्र के महान व्यक्तित्व, ऋषि, महात्मा और अपनी प्राचीन धरोहर को बचाने के लिए गौतम वंशीय राजपूतों तथा मुगलों के संघर्ष और अन्त में अवध के नवाब और ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अराजकता को प्रकाश में लाना है आजमगढ़ की स्मृतियां इतिहास में अमर है।

REFERENCES

इलियट एण्ड डाउसन : *दी हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड बाई ईट्स ओन हिस्टोरियन* खण्ड–5

मो0 हबीव एण्ड खलिक अहमद निजामी – *ए काम्प्रिहैसिव हिस्ट्री आफ इण्डिया* खण्ड–5

मोतीचन्द *काशी का इतिहास*

सिंह, ठाकुर प्रसाद *स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक जिला आजमगढ़* (सूचना विभाग,उ0प्र0)

सिंह मुखराम : *आजमगढ़ जनपद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि*

डिस्ट्रिक गजेटियर आजमगढ़

रहमान हवीवुर प्रशकरा : *उल्मा ए आजमगढ़*

श्रीवास्तव, आर्शीवादी लाल : *दी फर्स्ट टू नवाबस आफ अवध*

यादव, राम अवध (1987) आजमगढ़ की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि *स्वतंत्र भारत* 25 मार्च 1987।

सनातन, रवीन्द्र *आजमगढ़ की धरती*

वर्मा, परिपूर्णानन्द *वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन*

वेवरिन ए0एस0, *बावरनामा*

नरिमन जैक्सन तथा आगेजन *प्रिय दर्शिका* *नेहरू स्मारिका* 14 नवम्बर 1973

अबुल फजल *आइने अकबरी*